शोध मंथन Vol. XV No.I Jan.-Mar.2024 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Impact Factor 8.870 (SJIF)

भारतीय समकालीन कला में राजा रवि वर्मा का योगदान

प्राप्तिः 14.03.2024
स्वीकृतः 25.03.2024

15

डॉ० ओम प्रकाश मिश्रा
प्राचार्य
मिनर्वा इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट एंड टेक्नोलॉजी, उत्तराखंड
ईमेलः *mishraop200@gmail.com*

लोनशी रावत
शोधार्थी
मिनर्वा इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट एंड टेक्नोलॉज, उत्तराखंडी

सारांश

भारतीय कला का इतिहास अत्यंत प्राचीन है। भारतीय चित्रकारी के प्रारंभिक उदाहरण प्रागैतिहासिक काल के हैं। जब मानव गुफाओं की दीवारों पर चित्रकारी किया करता था। लेकिन समय इतना तेजी से बढ़ने लगा की आज कला ने विज्ञान का सहारा लेकर गति पकड़ ली है। जिससे सामाजिक मूल्य व्यक्ति की सोच, व्यवहार आदि सब कुछ बदल गया है। समकालीन कला भी इसी बदलाव का परिणाम है। विज्ञान ने हमें नए–नए साधन, विधियाँ प्रधान की है। जिसका उपयोग कला में बहुत ही बखूबी से किया जाने लगा है। जिससे कला विभिन्न रूपों में प्रकट हुई। नए–नए समय में नए–नए कलाकारों द्वारा नई–नई शैलियां विकसित हुई और नए–नए माध्यम व तकनीक जुड़ते रहे भारतीय कला में हुए अद्‌भूत परिवर्तनों ने आज कला को एक नए आयाम पर पहुँचा दिया है जिसमें कला में आये इस परिवर्तन की लहर का एक सकारात्मक परिणाम यह है कि समकालीन कला में कई भारतीय कलाकारों का जन्म हुआ जिनमें राजा रवि वर्मा का कला में अद्‌भुत व अतुलनीय योगदान रहा है। जिन्होंने कला के क्षेत्र में ख्याति अर्जित की और अपनी पहचान बनाई।

मुख्य बिन्दु

समकालीन, सामाजिक, यथार्थवादी, आधुनिक कलाकार।

एक समय की बात है। केरल के किलिमानूर नामक गांव में कच्चू नामक बालक ने मंदिर की सफेद दीवार पर कोयले से चित्रकारी कर दी थी। जिससे नाराज होकर माली ने स्वामी से उसकी शिकायत की। जब स्वामी स्वयं वहां पहुंचे तो उन्होंने देखा एक घोड़ा मंदिर की सफेद दीवार पर कोयले से खींची रेखाओं से बना हुआ है। वह एकदम उसे घोड़े को देखते रहे। जिसे देखकर क्रोधित होने की जगह वह दंग रह गए। मंदिर की दीवार पर बने घोड़े ने उन्हें आश्चर्य में डाल दिया था। उन्हें विश्वास ही नहीं हो रहा था कि यह घोड़ा उनके भांजे कोच्चू ने बनाया। ये स्वामी

किलिमानूर के राजा राज वर्मा थे और यह कच्चू नामक बालक और कोई नहीं बल्कि भारतीय चित्रकला इतिहास का राजा व भारतीय चित्रकला इतिहास का एक अमर नाम राजा रवि वर्मा था। किलिमानूर का वातावरण पूरी तरह धार्मिक और सांस्कृतिक था। धार्मिक इस अर्थ में कि घरों में, मंदिर में प्रतिदिन पूजा–पाठ होता। पाठशाला में संस्कृत सिखायी जाती। वेदों का अध्ययन कराया जाता। किलिमानूर के जीवन में संस्कृति का भी महत्व था।आसपास के वातावरण का मनुष्य पर बड़ा प्रभाव पड़ता है। रवि वर्मा पर भी किलिमानूर के वातावरण का काफी प्रभाव पड़ा।

रवि वर्मा का जन्म 1848 ईस्वी में केरल की राजधानी त्रिवेंद्रम के निकट किलिमनूर ग्राम मैं हुआ था। इनकी मां उमा अंबाबाई संगीत में दक्ष थी जबकि पिता नीलकांत भट्ट वेदों के ज्ञाता व संस्कृत के पंडित थे। उस समय शादी के बाद पति को पत्नी के घर में रहने की प्रथा थी। अतः रवि वर्मा के पिता उनकी पत्नी के भाई राजा राज वर्मा के यहां रहते थे। कोच्चू यानी रवि वर्मा के मामा राज वर्मा ने उनके चित्रों को दीवार पर देखकर उन्हें चित्रकार बनाने का निर्णय लिया। राजा राज वर्मा स्वयं भी चित्रकारी करते थे इसलिए बालक कच्चू कि कला प्रतिभा को देखते हुए उन्हें यह विश्वास था कि कच्चू एक दिन अवश्य ही बड़ा चित्रकार बनेगा। प्रारम्भिक कला शिक्षा अपने मामा राजा राज वर्मा से मिली। वे तंजौर शैलीके चित्र बनाया करते थे तथा यूरोपीय कला पद्धति के प्रशंसक थे। तेल पद्धति का उपयोग भारत में पहली बार राजा रवि वर्मा ने किया था। राजा रवि वर्मा इस शैली के प्रथम भारतीय चित्रकार थे जिन्होंने यूरोपीय तकनीक में भारतीय विषयों का चित्रण किया। अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त राजा रवि वर्मा ने कला का सूत्रपात तो किया किन्तु अतीतकालीन भारतीय कला आदर्शों की गौरवशालिनी परम्परा से अनभिज्ञ रहते हुए उन्होंने विदेशी कला के अन्धानुकरण के साथ विदेशी कल्पनात्मक प्रणालियों को ही दुहराया। तथापि राजा रवि वर्मा का यह प्रयास नवीन युग के सूत्रपात का सूचक था जिससे भारतीय कला की अवरुद्ध ध ाारा को सर्वथा नवीन मार्ग मिला था। इसी समय अंग्रजों ने भारतीय कलाकारों को यूरोपीय कला तकनीक में प्रशिक्षित करने के लिए मद्रास (वर्तमान चेन्नई) कलकत्ता, लाहौर, मुम्बई तथा लखनऊ में कला विद्यालय खोले। यहाँ का वातावरण, शिक्षण–प्रणाली तथा सामग्री आदि यूरोपीय कला विद्यालय प्रणाली पर आधारित थी। विदेशी शासन की चकाचौंध व यूरोपीय चित्रों की नकल ने उच्च वर्ग को आकृष्ट किया, जिससे भारतीय अपनी कला निधि को उपेक्षित करने लगे। 1862 ई. में त्रिवेन्द्रम के महाराज आयिल्यम तिरुनाल के संरक्षण में रहते हुए मदुरई चित्रकार अलाग्री नायडू व तंजौर शैली के चित्रकार रामास्वामी नायडू से भी कला शिक्षा ली। तैल रंग माध्यम की शिक्षा रवि वर्मा ने डच चित्रकार थियोडोर जॉनसन को कार्य करते हुए देखकर ही ली। 1866 ई. में रवि वर्मा का विवाह त्रावणकोर की राजकन्या से हुआ।

राजा रवि वर्मा की कला–शैली तत्कालीन जनरुचि के अनुरूप थी जिसमें दर्शक की कल्पनाशक्ति को आकर्शित करने की क्षमता थी। उनकी लोकप्रियता का यही कारण था। आपने राष्ट्रीय भावना को भी पौराणिक व धार्मिक पक्ष के द्वारा साकार करने का प्रयास किया। नैतिकता की भावना आपके चित्रों में अन्य तत्त्वों की अपेक्षा सर्वोपरि थी। शैली तथा विषयवस्तु की दृष्टि से फ्रांसीसी नवशास्त्रीयतावाद का प्रभाव चित्रों में स्पष्ट परिलक्षित होता है। कलाकार के रूप में राजा रवि वर्मा को अभूतपूर्व ख्याति, लोकप्रियता तथा सफलता मिली। किन्तु एक तरफ विलक्षण ख्याति थी तो दूसरी ओर समीक्षकों की कटु आलोचनाएँ। तथापि रवि वर्मा के चित्र भव्य हैं। जया अप्पास्वामी ने आपके चित्रों की शैलीगत विशेषताओं के आधार पर ''विक्टोरियन इण्डियन'' शब्द का प्रयोग किया। ई.बी. हैवेल ने आपके चित्रों में ''अत्यन्त कल्पना प्रणव भारतीय काव्य तथ पौराणिक कथाओं के चित्रण में काव्यात्मक गुणों का अभाव तथा मूल भावना से हटने का आरोप लगाया। किन्तु रवि वर्मा ने किसी भी विषयवस्तु को मात्र अन्धानुकरण के रूप में नहीं वरन् मौलिकता से चित्रित किया। आपने महाकाव्यों के वर्णन को अपने चाक्षुष प्रस्तुतीकरण द्वारा सहज स्वीकार्य रूप में परिवर्तित किया है। आपने चिर परिचित विषयों को काव्यात्मक एवं दार्शनिक विशेषताओं के साथ चित्रित किया। यही कारण था कि आपकी कला जन सामान्य तथा प्रबुद्ध वर्ग दोनों में लोकप्रिय हुई। देवी–देवताओं की पावनता को रवि वर्मा ने बहुत श्रृद्धा से चित्रित किया। भारत के घर–घर में देवी–देवताओं की पूजा की जाती है उनका रूप आपकी तूलिका से ही निसृत हुआ। रवि वर्मा ने चित्रों में आकृतियों के शारीरिक गठन पर विशेष ध्यान दिया। मॉडल का प्रयोग कर यथार्थवादी अंकन किया जिससे चित्रों में ऐन्द्रियता दृष्टिगत होती है।

राजा रवि वर्मा के ऊशा अनिरुद्ध, शकुन्तला दुश्यन्त, राम द्वारा समुद्र का मानभंग, सत्यवादी हरिश्चन्द्र, कृष्ण व बलराम, रावण–जटायु, मत्स्यगंन्धी आदि इनके प्रसिद्ध चित्र हैं। दक्षिण भारत के जिप्सी' उनकी अद्वितीय कृति है। देवी आकृतियों में केरल के नारी सौन्दर्य प्रतिमान रूपायित हुए हैं। गंगावतरण, विराटा का दरबार, दादाभाई नौरोजी, गरीबी, भिक्षादान, माँ व बच्चा आदि चित्र जनरुचि के परिचायक हैं। रवि वर्मा के चित्रों में गहरे लाल, नीले, पीले, हरे, सुनहरे, जामुनी आदि मूलरंगों का प्रयोग भावोद्दीपक है। समूचा वातावरण आकर्षक, रम्य तथा उल्लासपूर्ण प्रतीत होता है। राजा रवि वर्मा ने तीन किस्म के चित्रों को बनाया राजा –महाराजाओं के व्यक्ति चित्र आम लोगों के चित्र व हिंदू –देवी– देवताओं के साथ–साथ पुराणे के चित्र। कुछ विद्वान रवि वर्मा को भारत का पहला आधुनिक चित्रकार भी मानते हैं क्योंकि रवि वर्मा ने यूरोपीय यथार्थवादी तेल चित्रण शैली को लोकप्रिय व प्रयोग किया और भारतीय परिवेश व भारतीय विषयों को चित्रित किया। भारत में पहली लिथोग्राफी की प्रिंटिंग प्रेस स्थापित करने वाले व्यक्ति भी थे जिससे वह हिंदू देवी–देवताओं के चित्रों को छापा करते थे उनके द्वारा बनाए गए पौराणिक कथानकों

व हिंदू देवी–देवताओं के चित्र भी बहुत लोकप्रिय हुए वह पहले भारतीय चित्रकार है जिन्होंने हिंदू देवी देवताओं को रूप दिया वह अपने प्रेस के माध्यम से आम जन–जन के घरों तक पहुंचा।

भारतीय जनता में अचानक रवि वर्मा के चित्रों की माँग बढ़ने के कारण 1894 ई. में वड़ोदरा के तत्कालीन दीवान राजा सर माधवराव के परामर्श से मुम्बई में एक मुद्रणालय स्थापित किया गया। इसमें जर्मन तकनीशियनों की देखरेख में उनके चित्रों की प्रतिकृतियाँ छपने लगीं। मुद्रित करने से भी आपके चित्रों का स्तर गिरा क्योंकि इनमें तकनीकी प्रवीणता की कमी रह जाती थी। फिर भी ये मुद्रित चित्र भारत के कोने–कोने में लोकप्रिय थे। रवि वर्मा के ये मुद्रित चित्र भारतीय कलैण्डर कला के विकास का मूल आधार रहे हैं। राजा रवि वर्मा ने निःसन्देह कला की भावी समृद्ध परम्परा के लिए एक पृष्ठभूमि तैयार की। आप भारतीय आधुनिक कला के प्रवेश द्वार पर पदार्पण करने वाले प्रथम कलाकार थे। कला समीक्षक अशोक मित्र के अनुसार ''रवि वर्मा को आलोचित करने की अपेक्षा इतिहासकारों को भारतीय चित्रकला के आधुनिक काल का प्रारम्भ रवि वर्मा से मान लेना चाहिए क्योंकि उन्होंने 'देखने' की समसामयिक दृष्टि दी।''

त्रावणकोर के महाराजा की अनुशंसा पर रवि वर्मा को 1866 ई. में 'ऑनर ऑफ बंगाल' दिया गया। 1873 ई. एवं 1875 ई. में स्थानीय ब्रिटिश रेजीडेन्ट के प्रोत्साहन से मद्रास कला प्रदर्शनियों में भाग लिया तथा गवर्नर स्वर्ण पदक प्राप्त किया। मद्रास के तत्कालीन गर्वनर बकिंघम के ड्यूक ने उनके अनेक चित्र क्रय किये। 1880 ई. की पूना कला प्रदर्शनी में उन्हें गायकवाड़ स्वर्ण पदक मिला। 1881 ई. में बड़ोदरा के अलंकरण समारोह में महाराजा, राजपरिवार के सदस्यों, ब्रिटिश रेजिडेन्ट और सर माधव राव की शबीह बनाने के लिए आमंत्रित किया गया। 1888 ई. में ऊटकमंड प्रवास के समय पौराणिक आख्यानों पर आधारित 14 चित्र बनाने का आमंत्रण मिला। इसके लिए आपने उत्तरी भारत भ्रमण कर रहन–सहन व वेशभूषा का अध्ययन किया। तत्कालीन लोकजीवन व नाटक मण्डलियों से पौराणिक वेशभूषा की प्रेरणा ली। किलीमान्नूर में रहकर ये चित्र बनाये तथा 1891 ई. में उन्हें वड़ोदरा लेकर आये। 1891 ई. में ही बोम्बे आर्ट सोसायटी का गौरवशाली पुरस्कार मिला। 1893 ई. में वर्ल्ड कोलम्बियन कमीशन के तत्वावधान में आयोजित शिकागो की भव्यतम अन्तर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी में उन्हें भारत का प्रतिनिधित्व करते हुए दो पदक तथा प्रमाण–पत्र प्राप्त किये। 1901 ई. में उदयपुर महाराणा के निमन्त्रण पर वहाँ जाकर राजपरिवार के व्यक्तिचित्र बनाये। 1904 ई. में ब्रिटिश सरकार ने उन्हें 'केसर ए–हिन्द' पदक से सम्मानित किया। 1905 ई में मैसूर महाराजा के आमंत्रण पर प्रिंस ऑफ वेल्स के लश्कर के साथ व्यक्तिचित्र, वन दृश्य एवं हाथियों के चित्र बनाएं। 1906 ई में कला सृजन करते हुए किलिमनूर में ही राजा रवि वर्मा का निधन हो गया।

2014 में केतन मेहता ने राजा रवि वर्मा के जीवन पर फिल्म – 'रंग रसिया' बनाई। इस फिल्म में रवि वर्मा का किरदार रणदीप हुड्डा ने निभाया। यह फिल्म अंग्रेजी में भी बनी। जिसका नाम

'कलर ऑफ' पैशन था। उनके जीवन पर आधारित एक फिल्म मलयालम में भी बनी जिसका नाम 'मकरामंजू' है। दुनिया की सबसे महंगी साड़ी इस महान चित्रकार के चित्रों में चित्रित साड़ियों की नकल को देखकर बनाई गई। 12 रतन व धातुओं से जुड़ी यह साड़ी 40 लाख की है जिसका नाम लिंबा बुक का रिकॉर्ड में भी दर्ज है। राजा रवि वर्मा के चित्रों का सबसे बड़ा संग्रह वडोदरा के लक्ष्मी विलास पैलेस में है।

संदर्भ

1. चतुर्वेदी, डॉ. ममता. (2016). समकालीन भारतीय कला. राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी. अक्टूबर।
2. चंद्रिकेश, जगदीश., बाछोतिया, हीरालाल. (1993). राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद. नवंबर।
3. https%//hi-m-wikipedia-org/wiki/-
4. https%//www-jagran-com/lifestyle/miscellaneous&father&of&indian &modern&art&raja& ravi&varma&birth&anniversary&today&22669741-html
5. https%//m-bharatdiscovery-org/india/-